8

बाल विकास में खेल विधि की भूमिका

सरोज गर्ग *

अमित कुमार दवे **

बाल्यावस्था बच्चे के जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण अवस्था होती है। इस अवस्था में बच्चों का विकास तीव्र गति से होता है विकास की इस तीव्रावस्था में बच्चों को शिक्षण पूर्व प्रचलित नीरस शिक्षण विधियों के माध्यम से ही करवाया जाता है। पूर्व प्रचलित शिक्षण विधियों के साथ प्राथमिक एवं पूर्व प्राथमिक स्तर पर खेल-विधि से शिक्षण करवाया जाए तो निश्चत ही अधिगम गुणात्मक रूप से प्रभावित होगा। खेल-विधि के अंतर्गत बच्चों की रुचि, आकांक्षा, योग्यता एवं आवश्यकतानुसार क्रियाओं का निर्धारण पूर्व में ही कर लिया जाता है। पूर्व निधर्रित विषय संबंधी क्रियाओं के माध्यम से बच्चे विषय-वस्तु अधिगम के साथ-साथ शारीरिक, मानसिक एवं संज्ञानात्मक विकास की ओर अग्रसर होता है। खेल-विधि के माध्यम से सुनियोजित शिक्षण संबंधी खेल का आयोजन करवाकर खेल-खेल में मनोरंजन के साथ मौलिक विकास एवं विषय-वस्तु के अधिगम की ओर बच्चे को प्रेरित किया जा सकता है। प्राथमिक स्तर के विभिन्न संस्करणों में विविध विषयों का शिक्षण यदि खेल विधि के माध्यम से ही करवाया जाए तो निश्चित ही बच्चों के सर्वांगीण विकास करने में हम समर्थ हो सकेंगे।

बाल्यावस्था बच्चे के जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण अवस्था होती है। बाल्यावस्था में आरंभिक छः वर्ष विशेष रूप से महत्वपूर्ण होते हैं। इस अवस्था में बच्चों का विकास अत्यंत ही तीव्र गति से होता है। विकास की इस तीव्रतम अवस्था में ही बच्चों को उपयुक्त वातावरण प्रदान किया जाना चाहिए जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो सके। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए घर के वातावरण के साथ-साथ विद्यालय में भी उचित वातावरण सृजन हेतु विशेष प्रयास अभिभावकों एवं अध्यापकों द्वारा किए जाने चाहिए। किंतु बच्चों के लिए वांछित वातावरण का दर्शन न के बराबर ही होता है। बच्चों को शिक्षण प्रचलित नीरस विधियों द्वारा भी करवाया जाता है। कहीं-कहीं तो सभी बच्चों को एक ही शिक्षण विधि से सीखाने का प्रयास किया जाता है। नीरस एवं एक ही प्रकार की विधियों द्वारा किए गए शिक्षण में बच्चे रुचि नहीं लेते हैं। रूचियुक्त शिक्षण नहीं होने से अधिगम भी प्रभावित होता है।

बच्चों के पूर्ण विकास के लिए जहाँ शिक्षा का महत्त्व है, वहीं खेलकूद, मनोरंजन और व्यायाम का भी अपना महत्त्व है। खेलते-कूदते तथा प्रसन्नचित्त रहने वाले बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास बड़ी ही तीव्र गति से होता है। यदि शिक्षक अपने

* *वरिष्ठ सहायक आचार्य*, लोकमान्य तिलक शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय

** *सहायक आचार्य*, राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, जर्नादन राय नगर, डबोक-313022 उदयपुर (राजस्थान)

शिक्षण पद्धति में खेल-विधि को अपना ले तो निश्चित ही शिक्षण एवं अधिगम बेहतर परिणाम देने वाले होंगे। सिल्विया वार्नर ने अपनी लोकप्रिय पुस्तक 'टीचर' में लिखा है कि ''व्यवस्था कैसी भी हो, कहीं भी हो, अगर अध्यापक में कल्पना है, सृजन के तत्त्व हैं, आनंद पैदा करने की योग्यता है तो वही जगह जीवंत हो उठेगी''।

बच्चे के सर्वांगीण विकास में शिक्षण विधियाँ भी अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। विभिन्न विधियों में खेल-विधि बच्चों के लिए विशेष रूप से कारगर सिद्ध हो सकती हैं। खेलना बच्चों की स्वाभाविक क्रिया है, बच्चे खेल-खेल में रोचकता एवं मनोरंजन के साथ सबसे अधिक सीखते हैं। खेल बच्चों के सर्वांगीण विकास में सर्वाधिक सहयोगी होते हैं।

अतः शिक्षण प्रक्रिया को रोचक बनाने हेतु खेलों को शिक्षण प्रक्रिया का आधार बनाया जाना चाहिए। **फ्रोबेल** के अनुसार ''बालक की आत्मक्रिया खेल द्वारा विकसित होती है, जिससे व्यक्तित्व का विकास स्वाभाविक रूप से होता है।''

खेल अपने आप में वह स्वयं प्रेरणात्मक क्रिया हैं, जो प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से बालक का शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास करती है। शिक्षण प्रक्रिया में अंगीकृत किए जाने वाले खेल शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति करवाने के महत्वपूर्ण साधन हैं। जब बच्चे की विषय-वस्तु से संबंधित तथ्यों, मूर्त-अमूर्त संकेतों, सिद्धांतों आदि को खेल से जोड़ने के अवसर शिक्षण में प्रयासपूर्वक उपलब्ध करवाए जाते हैं तब खेल एक शैक्षिक उपकरण बन जाते हैं और खेलना एक जीवंत क्रिया है।

उक्त मत को पुष्टि प्रदान करते हुए **मारिया मांटेसरी, पेस्टोलॉजी, गार्डनर, गिजुभाई एवं जन्नूभाई** ने शिक्षण प्रक्रिया में खेलों के माध्यम से अथवा खेल-खेल में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया संपादन को विशिष्ट स्थान दिया। पूर्व प्राथमिक स्तर पर बच्चे प्रत्यक्ष अनुभवों के द्वारा सीखते हैं। अतः खेल के माध्यम से उन्हें सीखाने का प्रयास किया जाए तो वे मनोरंजन के साथ-साथ विषय-वस्तु को अधिगम कर लेंगे।

इस प्रकार खेल प्राथमिक एवं पूर्व प्राथमिक स्तर के बच्चों की शिक्षा के लिए आदर्श माध्यम बन सकते हैं क्योंकि खेलों के माध्यम से कराया गया शिक्षण बच्चों को प्रत्यक्ष अनुभव देता है।

खेल-विधि के अंतर्गत सुनियोजित तरीके से पूर्व निर्धारित बाल केंद्रित क्रियाएँ होती हैं जिन्हें बच्चों की रुचि, योग्यता, आकांक्षा एवं आवश्यकता के अनुसार चयन कर व्यवस्थित किया जाता है। इन क्रियाओं का आयोजन इस प्रकार से किया जाना चाहिए कि बच्चों को विषय-वस्तु के साथ-साथ संज्ञानात्मक, भाषा एवं सामाजिक विकास के लिए भी प्रोत्साहन मिले साथ ही प्रत्येक बालक सक्रिय रूप से आयोजित खेल संबंधी क्रियाओं में अपनी सहभागिता रखे।

प्राथमिक एवं पूर्व प्राथमिक स्तर पर कक्षा-कक्ष में विभिन्न विषयों का ज्ञान प्रचलित विधियों से कराने की अपेक्षा यदि खेल विधि की सहायता से विविध विषयों का ज्ञान करवाया

जाए तो बच्चे (शिशु) सीखने में अपेक्षाकृत अधिक रुचि लेंगे। इस प्रकार खेल-खेल में बच्चे जब स्वयं खेलते हुए, क्रिया करते हुए एवं प्रत्यक्ष अनुभव करते हुए अधिगम करते हैं तो ऐसा अधिगम चिरस्थाई होता है।

खेल-विधि के माध्यम से बच्चे (शिशु) अपनी शक्ति अपने सामर्थ्य एवं अपनी रुचि के अनुसार सीखते हैं। खेल विधि के माध्यम से बच्चे अपनी शक्ति एवं ध्यान को केंद्रित करना भी स्वत: सीखने लगते हैं। इस संबंध में **ह्यूजेज एवं ह्यूजेज** ने भी कहा है कि "खेल विधि से सीखते समय बच्चे कलाकारों के समान होते हैं और उनके लिए खेल तथा कार्य का अंतर समाप्त हो जाता है।"

अत: पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक स्तर पर विभिन्न विषयों का ज्ञान प्रदान करने के लिए खेल विधि का चयन किया जाए। खेल-विधि द्वारा पठित विषय को बच्चे मनोरंजन के साथ अधिगम कर सकेंगे और साथ-ही-साथ अधिगमित ज्ञान को अधिगमित अनुभवों को चिरकाल तक स्थाई बनाएँ रखने में समर्थ हो सकेंगे।

पूर्व प्राथमिक स्तर पर खेल विधि के माध्यम से शिक्षण —

भाषा विकास हिंदी अथवा अँग्रेज़ी में वर्णों की पहचान के लिए निम्नानुसार खेल का आयोजन करवाया जा सकता है-

बच्चों को 10-10 के दो समूहों में बाँटकर 10 बच्चों के गले में वर्ण कार्ड्स एवं अन्य 10 बच्चों के गले में चित्र कार्ड्स पहनाकर मैदान में ले जाए। मैदान में चुने से दो गोले बनाएँ। एक गोला अंदर की तरफ़ एवं एक गोला बाहर यथा ◉। अंदर के गोले में वर्ण कार्डस् पहने हुए बच्चों को खड़ा किया जाए एवं बाहर के गोले में चित्र कार्डस् पहने बच्चों को खड़ा किया जाए। निर्देशक/अध्यापक के द्वारा खेल से संबंधित सामान्य निर्देश एवं खेल क्रिया विधि पूर्व में ही स्पष्ट कर दी जाए।

इसके पश्चात् अध्यापक/निर्देशक गोले के बीच में खड़े होकर घंटी अथवा टेप बजाना प्रारंभ करें। घंटी बजते ही वर्ण कार्डस् पहने हुए बच्चे गोल घेरे में दौड़ना प्रारंभ करेंगे एवं जैसे ही घंटी/टेप बजना बंद होगा अपने गोले में पहने वर्ण कार्डस् वाले बच्चे संबंधित चित्र कार्ड्स पहने हुए बच्चे के पास जाकर खड़े हो जाएँगे। सही स्थान पर खड़े न होने पर निर्देशक/अध्यापक उन्हें बच्चों को सही चित्र कार्ड्स की पहचान कारवाएगा एवं समझाएगा कि उन्हें कहाँ जाकर खड़ा रहना है एवं क्यों?

इस तरह यह खेल दो-तीन बार करवाने के पश्चात् चित्र-वर्ण कार्ड्स आपस में बदलकर पूर्वोक्त क्रियाओं की पुनरावृत्ति करवायी जाए। इसके पश्चात् चित्र कार्ड्स वाले बच्चों को बाहरी गोले में चक्कर लगवाकर अपने चित्र से संबंधित वर्ण कार्ड्स वाले बच्चे के पास जाने संबंधी निर्देश दिए जाए। इस तरह खेल-विधि के माध्यम से बच्चे मनोरंजन के साथ-साथ वर्ण-चित्र की पहचान भी कर सकेंगे एवं सीखे हुए ज्ञान को चिस्थाई रख सकेंगे। इस विधि द्वारा बच्चों में शारीरिक विकास एवं संज्ञानात्मक विकास के साथ-साथ भाषा शब्दावली में भी वृद्धि हो सकेगी।

बच्चों को दैनिक जीवन से संबंधित सामान्य

जानकारियाँ भी खेल विधि के माध्यम से प्रदान की जा सकती हैं। उदाहरणस्वरूप किससे क्या प्राप्त होता है? यह जानकारी खेल-खेल में भी प्रदान की जा सकती है। इसके लिए भी पूर्ववत् चुने से गोले बनाए एवं दोनों गोलों में बच्चों को पृथक-पृथक रूप से संबंधित चित्रों के कार्ड्स पहना दें। जैसे- अंदर वाले गोले के बच्चों को मुर्गी, गाय, मधुमक्खी, भेड़ आदि के चित्र कार्ड्स पहनाए एवं बाहर वाले गोले के बच्चों को अंडा, दूध, शहद, ऊन आदि के चित्र कार्ड्स पहनाए एवं सामान्य निर्देश देकर पूर्ववत् संपूर्ण क्रियाएँ करवाकर बच्चों को खेल-खेल में बहुत कुछ सीखाया जा सकता है।

भाषा विकास हिंदी एवं अँग्रेज़ी में किए गए खेल के आयोजन के समान ही **गणना विकास** के अंतर्गत बच्चों को एक से दस तक क्रमशः नंबर दें अथवा गले में अंक कार्ड्स पहना दें इसके बाद खेल के संबंध में आवश्यक निर्देश दें कि प्रत्येक बच्चे को निश्चित सूचना के बाद व गिनती के क्रम में खड़ा रहना है। निर्देशनुसार बच्चे खेल खेलेंगे नियत स्थान पर खड़े रहेंगे। शेष बच्चों को खेल में सम्मिलित बच्चे अपने अंक दिखाएंगे एवं बुलवाएँगे। इसी प्रकार चक्र परिवर्तन में दूसरे बच्चों को खेलने का अवसर दिया जाएगा। उक्त प्रकार से शिक्षक/अनुदेशक बच्चों को व्यवस्थित खेल का आयोजन कर गणना विकास में गिनती व क्रमबद्धता को खेल-खेल में सीखा सकता है।

सामान्य ज्ञान के अंतर्गत अच्छी आदतों का विकास करने के लिए शिक्षक बच्चों हेतु कक्षा में ही रबड़ का गुड्डा या गुड़िया, पानी भरा टब, ब्रश, साबुन, तौलिया आदि उपलब्ध करा प्रत्यक्ष क्रियाएँ-गुड्डे को समूह द्वारा ब्रश कराना, हाथ धुलाना, नहलाना, पौछना, कपड़े पहनाना आदि क्रियाएँ स्वयं संपन्न करवाकर खेल-खेल में अच्छी आदतों का संचार भी बच्चों में किया जा सकता है।

इस प्रकार पूर्व प्राथमिक स्तर पर विभिन्न विषयों के शिक्षण हेतु कुछ विशिष्ट प्रकरणों को खेल के माध्यम से पढ़ाया जाए तो मनोरंजन के साथ-साथ स्वयं के अनुभवों द्वारा अर्जित ज्ञान बच्चों में चिरस्थाई रहेगा।

प्राथमिक स्तर पर खेल विधि द्वारा शिक्षण

प्राथमिक स्तर पर खेल विधि द्वारा भाषा शिक्षण के अंतर्गत विलोम शब्दों, अनेकार्थी शब्दों, संज्ञा, सर्वनाम, पर्यायवाची आदि शब्दों का शिक्षण प्रभावी तरीके से करवा सकते हैं और प्रत्यक्ष अनुभवों एवं क्रियाओं द्वारा अधिगमित विषय-वस्तु को चिरस्थाई बना सकते हैं।

साँप सीढ़ी द्वारा शब्दों का ज्ञान

सर्वप्रथम विलोम शब्दों से युक्त साँप सीढ़ी बोर्ड का निर्माण किया जाएगा। बोर्ड पर सीढ़ी एवं साँप के अग्र पश्च भाग पर अंकों के साथ में मूल शब्दों एवं उनके विलोम शब्दों को क्रमशः लिख दिया जाएगा। साथ-ही-साथ बच्चों को खेल से संबंधित सामान्य जानकारियों से अध्यापक के द्वारा पूर्व में ही निर्दिष्ट कर दिया जाएगा। पश्चात् अध्यापक के निर्देशन में 4/8/10 बच्चे क्रमशः अपनी-अपनी गोटियों के साथ में प्रचलित साँप सीढ़ीवत् खेल खेलना

प्रारंभ करेंगे। पाँसे को घुमाकर छात्र क्रमशः डालेंगे एवं प्राप्त अंकों के अनुसार अपनी-अपनी गोटियों को चलाएंगे। इस प्रकार सीढ़ी वाले अंक पर यदि कोई छात्र पहुँचता है तो सीढ़ी के नीचे एवं शीर्ष भाग पर लिखे शब्द एवं उसके विलोम के बारे में जानकारी प्राप्त करेगा। उसी प्रकार साँप के मुँह तक पहुँचने पर मुँह एवं पूँछ पर लिखे शब्द एवं उसके विलोम की जानकारी प्राप्त कर सकेगा। इस प्रकार प्रत्येक बालक अपनी बारी के अनुसार पाँसा डालते रहेंगे एवं क्रमशः साँप व सीढ़ी के माध्यम से अपने विलोमादि शब्दों का भंडार खेल-खेल में सामूहिक रूप से करने में समर्थ हो सकेंगे। साथ ही इस प्रकार से प्राप्त ज्ञान को चिरस्थायी बनाने में समर्थ हो पाएंगे।

इसी तरह से पर्यायवाची शब्दों का शिक्षण भी यदि खेल विधि द्वारा करवाया जाए तो अधिगम मनोरंजन के साथ चिरस्थाई होगा।

पर्यायवाची शब्दों के शिक्षण हेतु व्यूह रचना के अंतर्गत पर्यायवाची शब्दों से युक्त चित्रों के कार्ड्स एवं शब्दों के काड्स निर्माण कर गले में पहन सके ऐसी व्यवस्था कर ली जाए। चित्र कार्ड्स बच्चों के गले में पहना कर गोले में निश्चित दूरी पर खड़े कर दें एवं शब्द कार्ड्स बच्चों को अलग से गले में पहनाकर गोले के बाहर खड़े कर दें, इसके पश्चात् अध्यापक खेल से संबंधित आवश्यक निर्देश दें एवं खेलने के नियमों को बताकर ध्वनि यन्त्र के माध्यम से खेल आरंभ करें एवं ध्वनि यंत्र की वादन समाप्ति के साथ कार्ड्स व शब्द कार्ड्स वाले छात्रों का मिलान करें जो छात्र सही समूह में खड़ा नहीं हो उसे उसी के समूह में जाने हेतु कहें एवं प्रत्येक चित्र कार्ड्स के साथ में पर्यायवाची शब्द कार्ड्स की आवृत्ति करें। चित्र कार्ड्स वाले छात्रों एवं शब्द कार्ड्स वाले छात्रों के मध्य अदला-बदली कर पूर्ववत् खेल की तीन-चार बार आवृत्ति करने से बच्चे चयनित पर्यायवाची शब्दों को खेल-खेल में मनोरंजन के साथ समझ जाएंगे एवं सीखे हुए ज्ञान को चिरस्थायी रख सकेंगे। साथ ही शारीरिक व्यायाम भी हो जाएगा।

गणित विषय में खेल के माध्यम से लंबाई मापनी, ऊँचाई मापन आदि लंबी कूद व ऊँची कूद का आयोजन कर स्वयं बच्चों से ही लंबाई व ऊँचाई मापन कर शिक्षक के द्वारा बिंदु स्पष्ट किया जा सकता है। इसी प्रकार सभी बच्चों की कूद में कूदी जाने वाली कुल लंबाई व कुल ऊँचाई में प्रतिभागी बच्चों का भाग बच्चों से ही लगवाकर औसत भी स्पष्ट किया जा सकता है। कक्षा-कक्ष में लाभ-हानि प्रकरण को खेल कराकर भी समझाया जा सकता है। इसी प्रकार खेल का कक्षा में आयोजन कर बालक में व्यक्तिशः चिंतन, निर्णय तर्क व गणना की तारतम्यता का मौलिक विकास किया जा सकता है।

उक्त खेल के समान ही पर्यावरण अध्ययन के अंतर्गत हमारे सहायक मतदान प्रणाली तत्त्व प्रतीक, तरह-तरह के घर आदि बिंदुओं को कक्षा-कक्ष में प्ले करवाकर अथवा कक्षा-कक्ष के बाहर प्रत्यक्ष खेल के माध्यम से बालकों को समझाए जा सकते हैं।

इस प्रकार से प्राथमिक स्तर पर हिंदी, अँग्रेज़ी, गणित व पर्यावरण अध्ययन शिक्षण हेतु कक्षा-कक्ष के अंतर्गत एवं कक्षा-कक्ष के बाहर खेलों का उचित आयोजन करके प्रभावी एवं चिरस्थाई विषय-वस्तु के अधिगम के साथ शारीरिक, मानसिक एवं संज्ञात्मक विकास की ओर बालक को अग्रसर किया जा सकता है। उक्त शिक्षण विधि के माध्यम से बालक खेल-खेल में मनोरंजन के साथ मौलिक विकास करता हुआ विषय-वस्तु का भी अधिगम सहजता से कर लेता है।

निष्कर्ष—

प्राथमिक स्तर बाल विकास का आधार स्तंभ है। प्राथमिक स्तर पर बालक की नींव जितनी मज़बूत की जाएगी उतना ही प्रभावी प्रभुत्वसंपन्न व्यक्तित्व का निर्माण सम्भव हो सकेगा। भावी प्रभुत्वसंपन्न व्यक्तित्व निर्माण का प्रथम चरण प्राथमिक स्तरीय शिक्षण है। प्राथमिक स्तरीय शिक्षण को जितनी रोचकता एवं सहजता से करवाया जाए उतना ही अधिगम प्रबल एवं चिरस्थाई होगा। प्रबल एवं चिरस्थाई अधिगम हेतु यदि कोई विधि प्राथमिक स्तर पर कारगर सिद्ध हो सकती है तो वह है खेल-विधि।

प्राथमिक स्तर के अंतर्गत यदि खेल विधि के माध्यम से बच्चों को विविध विषयों की विषय-वस्तु का शिक्षण करवाया जाए तो निश्चत ही पूर्व प्रचलित शिक्षण विधियों की अपेक्षा अधिगम गुणात्मक रूप से प्रभावित होगा।

अत: प्राथमिक स्तर पर शिक्षण करने वाले अध्यापक/निर्देशक अपने विषय को खेल-खेल के माध्यम से कैसे पढ़ाएँ? इस हेतु विशिष्ट व्यूह रचना तैयार करें। तद्नुसार खेल पाठ योजना का निर्माण करें एवं उसे बच्चों पर लागू करें तो निश्चित ही शिक्षण का धनात्मक अधिगम हम शिक्षक समुदाय के सामने होगा। अंत में सभी अध्यापक बंधुओं से आग्रह है कि प्राथमिक स्तर के विभिन्न संस्करणों हेतु खेल विधि को शिक्षण के रूप में विशेष रूप से महत्त्व दें। आज बढ़ते हुए एकांगी परिवारों के प्रभाव से विगठित होते समाज का पुर्नसंगठन यदि करना है तो खेल-विधि द्वारा बच्चों को शिक्षित कर बच्चों में विषय-वस्तु के साथ-साथ मूल्य, संस्कारादि की स्थापना करें जिससे कल का नव समाज पूरा आदर्शों के साथ नवविकास को प्राप्त कर सके।

❑❑❑